के परमेश्वर और अजन्मा हैं, वह अध्यात्म-साक्षात्कार में सबसे सफल समझा जाता है। उस अवस्था में श्रीकृष्ण की परम सत्ता को पूर्ण रूप से जान जाने पर ही पूर्ण रूप से पापमुक्त हुआ जा सकता है।

यहाँ **अजम्** (अजन्मा) का अर्थ द्वितीय अध्याय में जीवात्मा के लिए आए 'अजम्' शब्द से भिन्न है। जीवात्मा विषयासक्ति के परवश हुए बारंबार जन्म-मृत्यु को प्राप्त होते रहते हैं, जबकि श्रीभगवान् में ऐसा नहीं है। जीव देहान्तर करते हैं, पर श्रीभगवान् के विग्रह में परिवर्तन नहीं होता। प्राकृत-जगत् में अवतीर्ण होने पर भी वे अजन्मा हैं। इसी से चौथे अध्याय में कहा है कि भगवान् अपनी आत्ममाया के प्रभाव से अपरा प्रकृति के वश में कभी नहीं आते; वे नित्य परा प्रकृति में अवस्थित हैं।

वे सृष्टि से पूर्व थे, इसलिए अपनी इस सृष्टि से भिन्न हैं। ब्रह्मादि सब देवताओं का इस प्राकृत-जगत् के अन्तर्गत सृजन हुआ, परन्तु श्रीकृष्ण नित्य अजन्मा हैं। यही कारण है कि वे ब्रह्मा, शिव आदि महादेवों से भी सर्वथा श्रेष्ठ हैं। वस्तुतः ब्रह्मा, शिव आदि सम्पूर्ण देव-समूह के स्रष्टा होने के कारण वे सब लोकों के परमेश्वर हैं।

श्रीकृष्ण सम्पूर्ण सृष्टि से विलक्षण हैं। उनके इस तत्त्व को जानने वाला तत्क्षण सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है। भगवत्-ज्ञान की प्राप्ति के लिए पापों से पूर्ण मुक्त हो जाना आवश्यक है। जैसा भगवद्गीता में कथन है, केवल भक्ति से श्रीभगवान् को जाना जा सकता है, किसी और विधि से नहीं।

श्रीकृष्ण में मनुष्यबुद्धि कभी न करे। पूर्वकथन के अनुसार, मूढ़ मनुष्य ही उन्हें मनुष्य समझने की भूल करता है। प्रकारान्तर से, यहाँ इसी तत्त्व का प्रतिपादन है। जो मूढ़ नहीं है, अर्थात् जिसमें भगवत्-स्वरूप को जानने के लिये पर्याप्त बुद्धि है, वह मनुष्य पाप से नित्यमुक्त है।

यदि श्रीकृष्ण देवकीनन्दन हैं तो फिर अजन्मा कैसे हो सकते हैं? इसका उत्तर श्रीमद्भागवत में है। वसुदेव-देवकी के सम्मुख वे सामान्य बालक के समान प्रकट नहीं हुए थे। अपने विष्णु रूप में प्रकट होकर ही उन्होंने सामान्य सा बालरूप धारण किया।

श्रीकृष्ण के आज्ञानुसार जो भी कर्म किया जाता है, वह दिव्य होता है। वह शुभ-अशुभ प्राकृत फलों से दूषित नहीं हो सकता। प्राकृत-जगत् की वस्तुओं में शुभ-अशुभ की धारणा एक प्रकार का मनोधर्म ही है, क्योंकि इस जगत् में ऐसा कुछ नहीं है जिसे शुभ कहा जा सके। यहाँ सब कुछ अशुभ है, क्योंकि स्वयं प्राकृत आवरण परम अशुभ है। हमने इसमें केवल मंगल (शुभ) की कल्पना सी कर ली है। सच्चा मंगल तो केवल पूर्ण भक्ति और सेवाभाव से युक्त कृष्णभावनाभावित क्रियाओं में है। अतएव यदि हमें कुछ भी इच्छा हो कि हमारी क्रियाएँ मंगलदायक हों, तो श्रीभगवान् की आज्ञा के अनुसार कार्य करना चाहिए। श्रीभगवान् की आज्ञा श्रीमद्भागवत, श्रीमद्भगवद्गीता आदि सत्-शास्त्रों और सद्गुरु से प्राप्त होती है। गुरु श्रीभगवान् के प्रकाश हैं, अतएव उनकी आज्ञा साक्षात् भगवान् की आज्ञा है। गुरु,